200 P
756
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1169
10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 756

8 ✓
2011

756

❀ वन्देमातरम् ❀

# सत्याग्रह संग्राम

प्रकाशक—

## पन्ना लाल वर्मा,

भजनोपदेशक

इलाहाबाद।

प्रथमबार ] सर्वाधिकार सुरक्षित [ मूल्य दो आना

891.431
V59Sa

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 756
Date 20.12.71
GOVT. OF INDIA

IMPERIAL RECORDS DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR. 1931

## ॥ पाठकों के प्रति दो शब्द ॥

पाठकगण—इस वीर प्रसूता भारत जननी के शस्त्र धारी वीरों की गाथा तो अनन्त है और इतिहास प्रसिद्ध आल्हा ऊदल आदि वीरों की वीरता बड़े चाव से गाई व सुनी जाती है—इस समय सत्याग्रह संग्राम के निहत्थे वीरों की वीरता देखकर मन में विचार हुआ कि पंखियों की तरह जोत शिखा रूपी भारत जननी पर नेवछावर होने वाले वीरों की वीरता आल्हा के धुन में लिखूं, परन्तु इस संग्राम की गाथा अथाह समुद्र की भांति अगम है यदि कोई विद्वान लेखक इसे लिखेंगे तो महाभारत जैसा एक ग्रन्थ निर्माण हो जायगा, मुझमें तो अक्षर उच्चारण की भी योग्यता नहीं फिर भला कैसे समुद्र सम अगाध गाथा को वर्णन करता-परमेश्वर की कृपा से सत्याग्रह संग्राम के कुछ अंशों को टूटे फूटे शब्दों में वर्णन कर सका हूँ यदि पाठकगण अपनायेंगे तो मैं अपने को कृतार्थ जानूंगा।

# ❀ आरम्भ कान्ड ❀

(अपनी सूझ और 'भारत' के आधार पर)

श्री रामचन्द्र को सुमिरौं पहिले जिनको जपत अहै संसार।
दुःखी होयगे दुखियारिन से सुन रावन का अत्याचार॥
कष्ट नसावन को दुखियन के देश में थापन हेतु सुराज।
निकल खड़े भे महल त्याग के सुख सम्पत औ छोड़ा राज॥
त्याग देख के रामचन्द्र का बन चारिन ने दीना साथ।
बिजय सत्य की भई असत पर औ रावन का कटगा माथ॥
फिर मैं सुमिरौं श्री कृष्ण को जग में जाहिर जिन कर ज्ञान।
दुखी देख के वे पाण्डव को दुर्योधन पंह कीन पयान॥
बहु समझायो मन मोहन ने पर वह बोला घमण्ड बढ़ाय।
नोक सुई सम देंव न पृथिवी करौ जो तुम्हरे मन में आय॥
ऐसा सुन के चले कन्हैया रण का डंका दिया बजाय।
हक़ की जीत भई नाहक़ पर मुरलीधर ने दिया कराय॥
यहि समय बखानौं श्री गांधी को दुखी देख के भारत माय।
जो कुछ लिक्खा वाइसराय को सो थोड़े में कहौं सुनाय॥
गांधी जी ने लिखा मित्र वर बृटिश हुकूमत भारी पाप।
दलिद्र इसने बनाया भारत दुख से जनता करै विलाप॥
नाश हांथ की भई कताई स्वास्थ हरन अबकारी कीन।
भारी बोझ नमक के कर का दबी है जासे जनता दीन॥

मिलै आपको श्री मान जी हरएक महीना एकइस हजार।
यानी रोज सात सौ पावत आप करारा हैं कलदार।
ग्रेट बृटेन की फीकस औसत रोजाना दुइ रुपिया यार।
दुइ आना औसतन आय है भारत में इक मनई क्यार॥
इन अनहोनी सब बतियन पर तनिक हृदय से करो विचार।
बिन स्वतन्त्रता बदलब इनका कठिन है ऐसन ख्याल हमार॥
दुख दूर करन को भारतियों के पड़िहै करना अवश्य उपाय।
मेरी समुझ में बली अहिंसा देई हिंसहि दूर भगाय॥
सत्याग्रह के द्वारा चाहौं अब तो मैं कुछ करना काम।
भले ही मुझको इन बातन से पागल दुनिया कहे तमाम॥
बिजय सत की भई कहां है बिन जोखिम में डारे जान।
चाहौं शोधन बुराई शासन सत्याग्रह से धरिये ध्यान॥
दूर भई वे अगर बुराई राह साफ तब लीजे जान।
नहीं तो न्योता यह देता हूँ, आपै राह करैं निर्मान॥
आपके दिल पर मेरे पत्र का भया असर गर नहिं श्रीमान।
कानून नमक का तोड़ै खातिर तब जानौ हम करब पयान॥
हम जानैं तुम डरिहौ बन्दी जासे हमरो काम नसाय।
मोहि विश्वास कि मोरे जगहा अनगित काम करैंगे आय।
धमकी जान्यो ना जियरा में सत्तै सत्त कहा समुझाय।
सत्याग्रही के स्वच्छ नीति सम करतब आपन लिखा बनाय॥
इस पाती का मिला जो उत्तर उसका लोगो एतनै सार।
"काम तुम्हारो हे गांधी जी अमन में बाधा देई डार"॥
दुर्योधन सा जब गांधी ने है हाकिम का देखा हाल।
रण भेरी तब बजी अहिंसा सुन वीरों ने ठोंका ताल॥

तीन लोक के बिजय करन को तिनरंग झन्डा दिया उड़ाय ।
ताके नीचे बीर हृदय सब ज्वानो भये इकट्ठा आय ॥
आय गये हैं सैना नायक बांके बीर जवाहिर लाल ।
ताल ठोंक के उठे पुरनिया त्याग मूर्ती मोती लाल ॥
साधू टन्डन ठाढ़े होयगे जुटे बहादुर सुन्दर लाल ।
बम्बई वाले सेठ भी आये जिनका नाम है जमुना लाल ॥
सन अस डाढ़ी मियां तय्यब की तिनहूँ बांधा पाग सम्हार ।
भई अवाई पटेल जी की जिनके बुद्धी अहै अपार ॥
श्री राजेन्द्र बिहार वाले जिनकर भारी हिन्द में नाम ।
सेन गुप्त बंगाले वाले औ मौलाना अबुल कलाम ॥
जितेन्द्र दास औ सुभाष बाबू शत्रु के तोड़न हार गरूर ।
श्री प्रकाश जी डाक्टर मुंजे सागर के श्री अब्दुल गफूर ॥
हसरत मोहानी औ शेरवानी श्री मालवी करुणा धाम ।
जफ़र अली खां डाक्टर किचलू हैं पंजाब में जो सरनाम ॥
पृथ्वी राजसिंह अहमद जामांखां औ कृष्ण दत्त पाली वाल ।
रघुबीर नरायन सिंह चौधरी औ सक्सेना मोहन लाल ॥
डाक्टर आलम गणेश शंकर औ बाबू सम्पूर्णानन्द ।
बीर पंजाबी परशुराम जी दिल्ली वाले रामानन्द ॥
ज्ञानचन्द औ सत्य पाल जी श्री कोठारी मनी लाल ।
भोपात्कार व कीका भाई चन्दू लाल व अमृत लाल ॥
पट्टा भाई सीता रमइया धीरज वान कलेश्वर राव ।
श्री कोंडा वेंकाटा पइया और श्री नारायन राव ॥
विजय कुमार जी भट्टा चारी प्रफुल्ला चन्दर परमथ नाथ ।
चार नियोगी कलकत्ते के और शास्त्री हरिहर नाथ ॥

गोपालदास जी मन्नू भाई औ श्री गांधी देवी दास।
रामदास जी गांधी जानो सुकर्म तेरा जिनके पास॥
गिनती नाही जिनकर लोगो कंह लग बरनौं सब सरदार।
बीर जुटे सब भारत भर के लै लै लश्कर बे शुम्मार॥
आई स्त्री श्री गांधी की है कस्तूरा बाई नाम।
चढ़ दौड़ीं हैं सरोजिनी जी देश की सेवा जिनका काम॥
श्री उमा औ स्वरूप रानी साधन चलीं देश का काज।
लीलावती चली जल्दी से सत्याग्रह का साजा साज॥
इन्दुमती औ श्री शान्ती जंग का बीड़ा लिया उठाय।
कमला कृष्णा औ लक्ष्मी जी रण आंगन को दौड़ीं धाय॥
कृष्ण कुमारी सर देसाई आय गईं तज जीवन आस।
पेरीनबहिन औ सत्यवतीजी बलिको चलि भईं सहित हुलास॥
हंसा मेहता दौड़ पड़ीं तब औरौ नेत्रिन हना निशान।
साज २ के दल देबिन का चलि भई होन हेतु बलिदान॥
भारी भीर भई झन्डे तर ज्वानो सुनियो कान लगाय।
जै जै कार से गूंजी धरती बोले जब सब स्वरै मिलाय॥
देख जमौड़ा बीर धीर का श्री गांधी ने कहा पुकार।
कान लगा के हे सब बीरो यह सुन लीजो बचन हमार॥
जिन्हें प्यारी घियु खीचरि है सो तो लौट घरहि को जाय।
जिन्हें प्यारा रन लोहा है साजै ऐसन साज बनाय॥
टोप झलरिया खद्दर वाली खद्दर ही का कुल्ह कबार।
पहिरौ पहिरौ मेरे रण शूरो बख्तर पहिरो खद्दर क्यार॥
बांध लंगोटा खद्दर वाला खद्दर का पैजामा धार।
खद्दर ही की बांधो पेटी कस के कमर होव तैय्यार॥

जूता मुरेरुवा दिढ़ता वाला तुम पांवन में लेओ डार।
पांव पिछाड़ी पड़ैं न जासे बढ़ के चलते चलो अगार॥

असहयोग की असी बांध लेव औ धीरज की बांध कटार।
नहीं जरूरत है ढालन की रोक्यो तुम छाती पर वार॥

देश भलाई का भाला लेव यह तुमका हम देईं बताय।
खंडा देशी का अच्छा है चक्र है चर्खा लेव उठाय॥

जान देन की बान डाल लेव सोई सर छेदन को बान।
मेरी कमान औ बचन पै रहना इसीको जानो लाल कमान॥

पवित्र मदिरा देश प्रेम की ताके नशा में होओ चूर।
सत्याग्रह का यह घोड़ा है बांधो आसन अब भरपूर॥

इतना सुन के शीश नवाके बन्दे मातरम कर ललकार।
पकड़ लगमिया हिम्मत वाली बांके बीर भये असवार॥

कानून नमक का सब ने चल के अपने शहर में कीना भंग।
गांधियु बाबा चलत भये हैं सत्याग्रह की करने जंग॥

आगे आगे श्री गांधी जी पाछे बीर चले हरषाय।
दिन २५ की रहिया तै कर डांडी में शंख बजाया जाय॥

कानून नमकका किला तोड़के बिल्कुल तहंवां दिया ढहाय।
प्रथम जीत भई बाबाकी विजय पताका दिया उड़ाय॥

पांच मई का हाल सुनो अब आधी रात की समया आय।
कैद में पड़िगे श्री गांधी जी केम्प कराडी माहीं जाय॥

सेनापति मैं तब तय्यब जी अहैं बम्बई में विख्यात।
कैद किहेस उनहूं का हाकिम लोगो सुनियो हमरी बात॥

---

# धरसाना कांड

## २३ मई और १३ जून के 'श्री बैङ्कटेश्वर समाचार' के आधार पर

पासै उटडी के धरसाना जहवां भारी नोन की खान।
धावा करन को ताके ऊपर सरोजनी जी किया पयान॥
६२ ज्वान का संगमें लैके पुलिस का अफ़सर पहुँचा आय।
राह रोक के वह बोलत भा आगे आप न पइहो जाय॥
उत्तर दीना सरोजिनी ने जौ आगे नहिं पइहैं जान।
पीछेयो हटब न यह तुम जानो ऐसा हमने ठाना ठान॥
अफ़सर कहे ठहर जौ यां पर सत्याग्रह का होय विचार।
तब तो हमरौ पुलीस का दल सब सत्याग्रह को है तय्यार॥
अच्छी बात है कहि देवी ने पास सेवकन लिया बिठाय।
पुलिस के अफ़सरने पुलिसन से तबतो उनका लिया घेराय॥
देवी के बैठत पुलिसौ बैठी तड़पै उपरा जेठ का घाम।
दोनों दल की टेक देख के जनता बहुतै हँसे तमाम॥
दिन बीता बिन दाना पानी भूखे प्यासे होयगै शाम।
जान न दीना कुछ देवी तक किया पुलिस ने ऐसा काम॥
चली हटाने से गै जनता ज्वानो आय गई है रात।
टेक न छोड़ै आपन कोऊ नहिं छोड़ै कोऊ आपन बात॥
मिलगा बिस्तर एक छोटा सा रहियेमें देवी किया आराम।
कुछ सेवकन ने भी तब लीयो रहई पर कीना विश्राम॥
कुछ रात बितायन जाग २ के तकली से रहिगे सुतवा कात।
१६ मई का इसी तरह से आय गवा यारो प्रभात॥

बोला अफसर इक देवी से का तुम्हरे यह समझ न आय।
ताज महल होटल में यांसे मिलिहै बहुतै सुख अधिकाय॥
बोली देवी ठान ठनी है सब समझैं हम काज अकाज।
बे सुध होब पड़ब या बन्दी तबै हियां से जाबै आज॥
यां बैठे से लू लगेगी फिर अफसर ने कहा सुनाय।
लाग सकत हैं लू औरो के बोली देवी यह मुसकाय॥
बात चीत यह होते होते सूरज देव पड़े दिखलाय।
लगे तपावन दुइनों दल को अपनी कड़ी धूप फैलाय॥
बीत गवा २८ घन्टा आय गवा मध्याह काल।
धीरज छूट गवा पुलीसन का उनकर होयगा हाल बेहाल॥
पुलिसका अफसर तब बोलत भा देवी सुनलेव बात हमार।
बन्दी जानौ सब अपने का जल्दी चलन को हो तैय्यार॥
जैसे निकसे सब घेरे से पुलिस ने छोड़ा बाहर जाय।
चढ़ाय देवी का मोटर पर औ उटडी में दिया पहुँचाय॥
बाद अठाइस घन्टा यारो किया है देवी ने जल पान।
पांव फूलगा देवी जी का भया सबन का कष्ट महान॥
दुइ सौ चौबिस बन्दी पड़गै १६-१७ तक में बीर।
आय गये तब सौ बम्बई से सत्याग्रही दृढ़ औ धीर॥
आये सेवक बहु जगहा से भारी होयगै तहवां भीर।
किहेन चढ़ाई धरसाना पर देख पुलीस है भई अधीर॥
जाय बिराजीं सरोजनी जी जहां पेड़ एक सुन्दर आम।
तहां बैठ संचालन करती सत्याग्रह का यह संग्राम॥
चारों ओर घेरा नोनवा के भरा भवा बिजुली से तार।
लाठी डंडा पुलिसौ लैके खड़ी सजग भै तहां तय्यार॥

बढ़े जब आगे सत्याग्रही पुलिस ने लाठी दिया चलाय।
मार निहत्थन को लठियनसे हा! धरतीमें दिया सोआय ॥
अंग भंग बहुतन का होयगा खून से लत-पत भवा शरीर।
एक सौ सत्याग्रही घायल तहँ पर होयगै बांके बीर ॥
कदम पिछाड़ी वे डराना चोट पे चोट गये सब खाय।
धन्य बखानो उन माता की पालेव जिनने दूध पियाय ॥
गिरफ़्तार तहं देवो होय गई पकड़ लिये गै बहुतै लाल।
पुलिस के मर्दो का पे लोगो औरौ कुछ अबसुनो हवाल ॥
एक सौ पैंसठ सत्याग्रही करके सुमिरनी प्रातःकाल।
चलिभै चढ़ने धरसाना पर पुलिस ने लाठी लिया सम्हाल ॥
पूरब पश्चिम में धावा भा दुइ दल सेवक दौड़े धाय।
पीट पुलिसने उन सबहिन को कैद की आज्ञा दिया सुनाय ॥
सुनके हुकुम बैठ के सबही सुमिरन करन लगे भगवान।
छः सवार सब गोरे दौड़े कचरेन उनका घास समान ॥
आहत योधा पड़े रहे तहं गये दुपहरी भर वे सेंक।
कटीली झाड़ी में पुलिसन ने हा घसीट तब दीना फेंक ॥
एक सौ पैंसठ बीरन माहीं ज्वानो सुनियो कान लगाय।
एक सौ ग्यारह अस्पताल में जख्मी दोन गये पहुँचाय ॥
पहिली जून की हालत सुन लेव जो रहिहै जिन्दगीभर याद।
बीरम गांव से बीर हैं आये भड़ौच और अहमदा बाद ॥
एक सौ बासठ होय के एकठा धरसाना पर गै ललकार।
पुलीस पहुँच के तब उनहुनपर लठियन की कीनी बौछार ॥
सबै सेवकनका कुछ समय में पीट भूमि में दिया गिराय।
एकसौ १५ घायल होय गै हा! हमसे कुछ कहा न जाय ॥

बुरी तरह भै पचीस घायल अचेत पन्दरह दुख से दून ।
दुइ पीड़ा से ऐंठ रहे वां ऐक के मुंह से बहता खून ॥
नंगा करके एक सेवक का सरजन डन्डा दिहेस घुसाय ।
यह ब्योहार भवा कइयो संग बीर गये हैं मुर्छा खाय ॥
दुइ सेवक का बुरी तरह से पुलिस ने बहुतै डारा पीट ।
फेंक दिहेस तब हा कांटन पर टांग पकड़ के उन्हें घसीट ॥
चालिस लठ थे पड़े एक पर तेहुँ पर गया घसीटा खींच ।
डिढ़ता देखके हा सरजन ने मुंह में भरा नोन कै कींच ॥
मूड़ बोरायस वह सेवक कै नोन के जल में बारम्बार ।
भेज दिहेस अस्पताल में तब मूर्छित होयगा जब सर्दार ॥
वह सेवक और वाके साथी गये होश में जबही आय ।
पूछा गवा तब उन सबहिन से अब कैसी है तुम्हारी राय ॥
सत्याग्रह करौगे तुम सब या घर जैहो देव जवाब ।
सत्याग्रह करैं सब बोले अब नहिं लौट घरन को जाब ॥
इतना सुन के पीट चले हैं ज्वान पुलिस के बड़े कुरूर ।
फिर घसीट के हा! सबहिन का अस्पताल से फेकेन दूर ॥
भीषन गाथा धरसाने की वर्णन हमसे कीन न जाय ।
कंठ रुकत है मेरे भायु आगे कैसे कहों मैं गाय ॥
धरसाना के इन धावन में बहुतै बीर आय गे काम ।
बन्दी पड़े हजारन योधा बेड़ा पार लगावैं राम ॥
अब तो चढ़ाई बन्द पड़ी है ज्वासो आय गई बरसात ।
कारण एकर नोन बनै जहं तहं पर है पानी भर जात ॥

---

# बडाला कांड

## ९ जून के 'श्री वैङ्कटेश्वर समाचार' के आधार पर

अहै बडाला बम्बई माहीं लोगो सुनियो करके ख्याल ।
बहुतै नोन बनै जेहि जगहा तंह का मैं अब कहौं हवाल ॥

ताके ऊपर भई चढ़ाई सेवक बहु जब आये काम ।
मिले इसाई और पारसी जुटगै जोधा तब इस्लाम ॥

हुक्म सुनाया तब कांग्रेस ने भोरहिं बीर चढ़ौ तुम जाय ।
हल्ला सुन के नगर नेवासी बीस हजार तहं पहुँचे जाय ॥

पुलिसौ की तब भई तयारी बांधे शस्त्र सात सौ ज्वान ।
निःशस्त्र के खातिर आई पलटन और बडाले बिराजी आन ॥

सत्याग्रह में आगे आगे जोधा मुसलिम की पयान ।
उनके पीछे चले पारसी तिन पाछे चलिभे खृष्टान ॥

सिक्ख पारसी औ गुजराती महाराष्ट्र महिलायें आय ।
सत्याग्रह के दल की जवानो आय के शोभा दीन बढ़ाय ॥

बढ़ती सैना गै बीरन की जिनकर गिनती तीस हजार ।
पहिल चढ़ाई भै मुसलिम की अल्लह अक्बर कर ललकार ॥

पुलिस सम्हारेस आपन लाठी दिहेस सेवकन मार गिराय ।
त्रिवांगर वाले सत्याग्रही बहुतै चोट गये हैं खाय ॥

तब किया चढ़ाई चौगिरदा से सत्याग्रही दलहिं बटोर ।
फैल गये वे बहुत दूर तक नोन करैहिया के चहुँ ओर ॥

लीलावती जी आगे बढ़ गईं सत्याग्रही लै कुछ बीर ।
नोनके ढेरवा लगाओ पहुँची पुलिस के लश्कर को वे चीर ॥

लौटो लौटो सरजन बोला आगे कबहुँ न पइहो जाय।
नहिं माना जब देवी जी ने तब तो कैद लीन करवाय॥
टूट पड़े तब सत्याग्रही ढेर नोन जहं चहुँचे जाय।
थोड़ी देर में सबही नोनवा चुटकी चुटकी लिया उठाय॥
लूट नोन की देख के लोगो सगरी पुलिस गई घबड़ाय।
दौड़े ज्वान रेसाले वाले अपनो घोड़ा दिया कुदाय॥
रौंद निहत्थन का वे डारेन उनका तनिक तरस न आय।
किहेन चोटीला नौ सनइन का टाप से डारेन है कचराय॥
फिर भई चढ़ाई महिलाओं की सैना बढ़ी बराबर जाय।
पहुँच न पायन वे नोनवा लग अफ़सर कैद लीन करवाय॥
कांटे दार तार से घेरा वर्ली में जो कारागार।
तहँ बडाले के कैदिन का राखेस है बम्बई सरकार॥
भई लठैती तहाँ पुलिस की ज़खमी भै सौ सेवक वीर।
अत्याचार कहां लग वरणों मेरी लेखनी होत अधीर॥
छेड़ी लड़ाई अब भारी है कहं लग लोगों देव बताय।
छोड़ बडाले की गाथा को दूसर समर कहौं समझाय॥

---

## ❀ पेशावर कांड ❀

### 'पेशावर की भीषण घटना' के आधार पर

सुनो हकीकत पेशावर की खूनी थे जो वीर पठान।
रण में जूझब जिनको ज्वानो था बच्चन के खेल समान॥
सोऊ अहिंसा का व्रत धारा गांधी जी की मानी बात।
करके एक सभा तै कीना मदिरा पै धरना देब परात॥

गिरफ़्तार भै राते नेता भई सबेरे है हड़ताल ।
भीड़ इकट्ठी भइ बजार में लोगो सुनियो आगे हाल ॥
भीड़ हटावन खातिर आई फौजी मोटर मै हथियार ।
आगे आगे एक सिपाही मोटर सैकिल पर असवार ॥
धक्का खाय गिर मोटर से तजेस सिपाही तुरतै प्रान ।
आगी लाग गई मोटर में वही समस्या के दरम्यान ॥
दूसर मोटर तब जल्दी से हाय भीड़ पर दिहेन चलाय ।
प्राण पखेरू उड़ा कयुक्का ताके नीचे गये दबाय ॥
भीड़ पै गोली बरसन लागी जैसे मघा नछत्र झर लाग ।
वीर निहत्थे जूझन लागे सकै न कोई तंह से भाग ॥
नदी सड़किया पेशावर की तेहिमा बही रक्त की धार ।
गांधी टोपी मछरी होय गै जनतहि लोथ भई घरियार ॥
चौंसठ लोथ घरे पहुँचायस जौन कमेटी खेलाफत क्यार ।
जखमी घायल लिखा पचासी सूची एक किया तैयार ॥
बहुत लोथ मोटर में भरके दिहेन सिपाहीं हैं फेकवाय ।
साफ करायन सड़कका फिरतो औ पनिया से दिहेन धोवाय ॥
दुख होत है कहत के अब तो पेशावर का खूनी हाल ।
काम आय गये जहां बहुत से भारत मां के प्यारे लाल ॥

---

# शोलापुर कांड

## १८ जुलाई के 'स्वाधीन भारत' के आधार पर

शोलापुर का हाल कहौं अब लोगो सुनियो धर के ध्यान ।
कहातो नाहीं जातै हमसे परन्तु थोड़ा करब बयान ॥

गांधी जी के जब बन्दी का शोलापुर में पहुँचा हाल।
सत्धारिन का जलूस निकला और शहर में भई हड़ताल॥
बन्द दुकानैं भई बाजार की दीखन लगा शहर सुनसान।
शोक भवा जनता का इतना मानो प्राण का निकसा प्रान॥
ताड़ का पेड़वा काटै खातिर तबतो चलिभे वीर पचीस।
इन वीरन में सात जने का पकड़ेस तबही आय पुलीस॥
भीड़ इकट्ठी तहं पर होयगै पुलिस पे ढेला दिया चलाय।
कटे भये पेड़वा का लै के बीच सड़क में दीन बिछाय॥
इतने में ही श्री मलप्पा धन सेठी तह पहुँचे आय।
स्वयम सेवकन का लीने संगमें पेड़ सड़कसे दिया हटाय॥
बोले जनता से हे लोगो अपने अपने घर को जाव।
बात मान लो मेरी भइयो जलदी से अब सब हट जाव॥
जातै रही तहां से जनता झगड़ा भा इक लड़के काज।
पुलिस ने गोली चलाय दीना लड़का सुरपुर गवा बिराज॥
चोट आय गै पचीस जन का घायल बहुतै होय गै तीन।
घेर लिया तब पुलिसकी चौकी क्रोधमें जनता ऐरूनकीन॥
जार दिहेन वे दुइ पुलिसनका दिहेन कचेहरी में आग लगाय।
लैके सेवक धन सेठी जी जनतहि शान्त रहे करवाय॥
पुलिसने गोली चलाई तबतक यारो सुनियो धर के ध्यान।
लगी लारियां सड़क पे दौड़न बैठे तामें पुलिस के ज्वान॥
तड़ तड़ तड़ तड़ गोली छूटै जस ओला बरसै झहराय।
निःसहाय जनता जूझन लागी लोथ पै लोथ गिरी भहराय॥
देखै भतीजा मानिक सेठ का अपने छत से मूड़ उठाय।
लागी गोली है खोपड़ी में तुरतै सुरपुर पहुँचा जाय॥

एक तमोलिन घायल होयगै इक मुन्शी का सुनो बयान।
गोली लागत जैसे सुगना उड़गा देखत उनकर प्रान ॥
जैन बोर्डिंग के हाकिम का पुत्र उमर में सतरह साल।
चूर २ गोली से होयगा ज्वानो ओकर सुन्दर भाल ॥
शान्तिकी कोशिश कीन कांग्रेस जब शान्ती होती देखलान।
होयगा जारी तबै मार्शलला होने लग गई बन्द दुकान ॥
गिरफ़्तारियां आरंभ हो गंइ सजा की होय गइ गरम बाजार।
अत्याचार की हद भइ ज्वानो कोड़े खायन बड़े मार ॥
दिन के ताले टूटे तहवां भये मवाली खुशी अपार।
गुजराती मारवाड़ी लुट गंइ दुइनो भारी तहाँ बजार ॥
कुचली जाने लगी बूट से उतार गांधी टोपी फाड़।
शहर छोड़ के भागी जनता दुख का उनपर गिरा पहाड़ ॥
दुइ व्योपारी भारी तहं के औरौ दुइ गै फांसी पाय।
और हाल अब लिखते लोगो रोवै लेखनी मेरी हाय ॥

---

## लखनऊ कांड

### २ जून के 'भारत' के आधार पर

पच्चीस मई का अब तो यारो कहौं लखनऊ का मैं हाल।
तेरह नेता बन्दी पड़गै दुख से जनता भई बेहाल ॥
शोक सभा तब करन कांग्रेस हे लोगो है किया विचार।
भये इकट्ठा सब सेवक तब जलूस आपन किया तयार ॥
दुइ दर्जन महिलायें सामें डेढ़ सौ सेवक देई गिनाय।
झन्डा लैके श्रीमती मित्रा सबकी अगुवा होय गइं आय ॥

जै जै बोलत श्री गांधी की बन्देमातरम करते गान।
साढ़े पांच बजे सन्ध्या को जलूस लोगो कीन पयान॥

रायल होटल के सम्मुहे जा कौंसिल भवन के आगे जाय।
हजरत गंज की ओर चले तब सत्याग्रही कदम बढ़ाय॥

खड़ी पुलिस थी अबटरोड पर लाठी बर्छा बांध तयार।
हथियार बन्द तंह रोके रस्ता खड़े बहुत घोड़े असवार॥

पुलिसनके अफसर मजिस्ट्रेट भी रहे तहां पर सैन सजाय।
उनने कहिके बेकानूनी जलूस तहं पर दिया रोकाय॥

श्री मती मित्रहि बन्दी करके तुरतै दीन जेल भेजवाय।
औरौ महिलन का भर करके लारी में कतहूँ दीन पठाय॥

हाय निहत्थन के मारन का तब तो सीटी दीन बजाय।
सुनतै सीटी बीर पुलिस तब आपन घोड़ा दिहेस कुदाय॥

घोड़े सवारों ने डंडन से करना शुरू किया तब मार।
चोट खाय के भागी जनता मचगा तहवां हाहाकार॥

उतर के घोड़े से पुलिसन ने स्वयं सेवकन पे कीना वार।
मार मार के बेदम कीना खोपड़ी उन कर डायन फार॥

स्वयं सेवकन के तब नेता ने लेट जाव यह कहा पुकार।
सेवक लेटे जब धरती पर तब डंडन की भै बौछार॥

घायल होयगै सत्याग्रही रक्त में लतपत भये बनाय।
हमला होयगा देखवय्यन पर घायल गै जब दीन हटाय॥

पिटता देख के श्रीकिचलू को श्रीमती बखशी दौड़ीं धाय।
सिर पर डन्डा उनहूँ खायन पीठौ हाथ गवा चोटियाय॥
श्रीमती मुशरन संग लड़का इक जाकी उमरथी १६ क्यार।
अबट हाल के वे हाते से देखत रहीं यह अत्याचार॥

सरजन और सवारें द्वारा लठ से उनपर होयगा वार।
खोपड़ी फाट गई बच्चे की औ बह्चली रकत की धार॥
बारह चौदह साल के लड़के कैयो अैसन खायन मार।
चूर-चूर भा हड़वा उनकर ज्वानो सुनियो बात हमार॥
को बीर बखानी इन पुलिसनका तनिक हृदयसे करो बिचार।
हाथ उठायन ऐ शिरियन पर इनके पौरुष का धिक्कार॥
लिखी कांग्रेस ने एक सूची है घायल भै दुइसौ उन्नीस।
हालत जिनकी खराब बहुतै ऐसन घायल जानो तीस॥
फिर २६ का हल्ला होयगा भन्डा दंगल निकली आज।
खड़बड़ पड़ गइ मिलत सूचना कीन तयारी पुलिससमाज॥
डर से करनी कल वाली के सजग भये अफसर सरकार।
अमीनुद्दौला पार्क के माहीं तुरतै फौजें लिया हंकार॥
दुइ सौ गोरे आय गये हैं आये साठ घोड़े असवार।
एकसौ चालिस पैदल तहवां बांधे आय गये हथियार॥
इधर तयारी भै कांग्रेस की ग्यारह बीर भये तय्यार।
धीर्य कटारी पासमें जिनके पर उपकार की जेहिमा धार॥
बख़्तर पहिरे वे खद्दर का औ खद्दर की झलरिया टोप।
असहयोग का बांधे खंजर जै की धुन हैं :छोड़त तोप॥
हाथ में भन्डा लिये तिरंगा गीत राष्ट्रीय करते गान।
अबट रोड औ हविट रोड के चौरहे से चले जवान॥
बिना रोक के जलूस चलभा आगे बढ़त बराबर जाय।
हजरतगंज से धूम-धाम के कांग्रेस आफिस पहुँचा आय॥
अमीनुद्दौला पार्क से तब तो अफसर फौजें लिया हटाय।
फौज के हटतै घुसगै सेवक उतरा भन्डा दिया लगाय॥

सभा एक है तहं पर कीनो भीड़ इकट्ठी भई अपार ।
गिनती उनकर लिखी औसतन जमा थी जनता २० हजार ॥

छाय रही थी तहां शान्ती परन्तु ऐसन हाल सुनाय ।
पत्थर हृदय पुलिस तहां पर तड़तड़ गोली दीन चलाय ॥

पांच लाल तहं जान से मरगै घायल साठ भये है लोग ।
दुइ की हालत बहुत बुरी भइ नहीं रहे बचने के जोग ॥

अब दुख गाथा कहांले बरनौं लिखत लेखनी होत बेहाल ।
याते छोड़ौं कथा यहां की और जगह का कहौं हवाल ॥

---

## बम्बई कांड

### १२ जुलाई के 'स्वाधीन भारत' और ८ अगस्त के 'श्री वैंकटेश्वर समाचार' के आधार पर

दिवस मनाउब गढ़वालिन का बम्बई में असभवा विचार।
फैल खबरिया चौतरफा गइ सारे नगर में हाट बजार ॥

जलूस निकसी यह घोषित भा औ जाई इसप्लेनेड मैदान ।
किया मनाही इस बिचार की खड़े भये हाकिम के कान ॥

भई तयारी तब पुलिसन कै सजगै तुरत सात सो ज्वान ।
घोड़ सवार और सातसो सजस आके घेर लिया मैदान ॥

थोड़ी जान के यह तय्यारी गोर्‌हु सैनिक लिया बोलाय ।
मानो चढ़ाई है दुश्मन पर जितिहैं ओका रणहि खेलाय ॥

इधर सजे हैं सत्याग्रही चर्खा चक्र है जिनके हाथ ।
बरछी मानो उनकर तकली तागा फांस सो राखैं साथ ॥

रुई का गाला है गोला अस पिउनी अहै तुपक अनुहार।
कमर में बांधे असहयोग की बड़ी कटीली वे तरवार॥
खेल न जान्यो इन अरुन को इनके विदृते कांग्रेस ज्वान।
साजके दल वे अपना चलिभे बहु रहिया से कीन पयान॥
भये इकट्ठा आगे चल के कइयो जत्था तीन बनाय।
पहिला जत्था भवा रवाना पुलिस के सहुँवे पहुँचा जाय॥
पुलिस कहेस पीछे हट जाओ कर दीना सब ने इनकार।
टूट पड़े तब सरजन उन पर मार धरनि पर दीना डार॥
हमला होयगा तब पुलिसौका जो लठियन से कीन्हेंन वार।
घायल होय के कितने गिर गै भै बेकाम बहुत ही चार॥
दुसरा जत्था तब पहुँचत भा एहू पे भै लठियन कै मार।
अंग अंग सब चूर चूर भा ऐसन बुरा भवा प्रहार॥
फिर पचीस का तिसरा जत्था वाही ठौर पे पहुँचा जाय।
चौतरफा से घेर एहू का पुलिस ने लाठी दिया चलाय॥
घायल होयके जब वे गिरगै स्वंय दल तब दौड़ा धाय।
पीट के इनहू का पुलिसन ने हा धरती पर दिया गिराय॥
सौ सेवक तब लैके पहुँचे नेता गौड़ व धीरज लाल।
औतै कैद भये दुइनो जन अब आगे का सुनो हवाल॥
धम्मनसिंह भी पकड़ लियें गै स्वयं सेवकन के जो कप्तान।
जसवन्तसिंह पड़े कैद में दल जो अकाली के प्रधान॥
भेज चुकी जब पकड़के इनका पुलिस तब डंडा लिहेस सम्हार।
सत्याग्रहिन पर वह टूटी औ कर चली वार पर वार॥
गिरगे सेवक सब धरती पर हालत होय न हमसे ब्यान।
घायल होयगे इस झगड़े में सत्याग्रही पांच सौ ज्वान॥

कदम पिछाड़ी वे डारा ना नाहीं मुंह से निकसी हाय ।
जै जै कार करत गांधी की सब गिर पड़े भरहरा खाय ॥

बन्दे मात्रम कहते कहते वे सुत्र भये हैं बांके बीर ।
देख सकैं देखवय्या नाहीं खून में सबही सना शरीर ॥

बहु देखवय्या घायल होयगे इनहूँ का पीटेन पुलिसके ज्वान ।
पुलिसके भाइनके करनी को लिखत होत है दुःख महान ॥

दिवस मनाओै में शोलापुर भवा ऐसनै रहा हवाल ।
तैंतीस घायल भै ओडू में भारत मां के प्यारे लाल ॥

तिलक जयनती मनाउब हम तो कीन कांग्रेस जबै बिचार ।
हंसा मेहतहि तब लिख भेजा यह आज्ञा अफसर सर्कार ॥

जलूस घूमी बहु सड़कन पर ऐसन हमका पड़ा सुनाय ।
रोड हार्नबी पर यह जानो जलूस तुम्हरा नाहीं जाय ॥

हुकुम न मानब यह अफसर का युद्ध समितिने ठाना ठान ।
श्रद्धा अञ्जलि चली चढ़ाने तिलकसमाधि पे भीड़ महान ॥

लोकमान्य के सामाधि ऊपर चढ़ाके जनता पुष्प का हार ।
जलूस अपना बना के चलि भइ हंसा देवी भई अगार ॥

इधर तैयारी भै पुलिसन कै बोरी बन्दर के दरम्यान ।
जलूस रोकै खातिर लोगो लठ लै पहुँचे पांच सौ ज्वान ॥

कैयो अफसर सरजन पहुँचे औ चालीस घोड़े असवार ।
राह कुइकशांक रोड की रोके पुलिस खड़े भै बांध कतार ॥

ज्यों ज्यों आगे चौपाटी के बढ़ा जलूस भइ भीड़ अपार ।
झन्डा लै के सिख सेवक सब आगे चले वीर सरदार ॥

तिनके पीछे महिलायें बहु चलि भइं मन में मोद बढ़ाय ।
वालंटियर कांग्रेस वाले जिनके पीछे चलत बनाय ॥

अपार जनता तब बम्बई की गीत राष्ट्रीय करती गान।
संग जलूस के चलत भई है मानो उमड़ा सिन्धु महान ॥

आय मिले तब श्री मालवी राजनीति में बड़े प्रवीन।
करतल धुनसे तब जनता ने बड़ी खुशी से स्वागत कीन ॥

आगे आगे श्री पंडितजी कुइकशंक रोड भये जब पार।
जलूस रोका तहां पुलिस ने लाठी लीने आय अगार ॥

बोले अफसर से पण्डित जो क्यों रोको वह राह हमार।
जिसपर चलने का है अफसर अहै हमें पूरा अधिकार ॥

तबतो अफसर अस बोलत भा यह सुन लीजे मेरी आज।
हुकुम आप को मानन चाही अवश्य पण्डित जी महराज ॥

बेजा हुकुम न मानब हम तो पण्डितजी ने कहा पुकार।
याके खातिर जो कुछ होवै सबके बरे अही तय्यार ॥

अफसर बोला पंडितजी से तब तो अैसन बचन सुनाय।
रह सकते हैं कब तक यां पर हमको आप देंय बतलाय ॥

श्री मालवी ने उत्तर दीना रहें यहां हम जब तक प्राण।
लेकिन तुमको अवश्य पड़िहै इकदिन लंदन करन पयान ॥

अफसर तुरतै फिर बोलतभा आप सुनो यह कान लगाय।
नहीं जरूरत महिलाओं की सड़क पे बैठीं हैं जो आय ॥

छोड़ब नाहीं हम महिलन का तब महराज बोले ललकार।
अहै मरदूमी यहै तुम्हारी रोक रहे हो राह हमार ॥

अफसर बोला काम करौं मैं दुसरे की आज्ञा अनुसार।
कहैं मालवीजी हम ना मानब यह तो भारी अत्याचार ॥

मेरी आज्ञा यह नाहीं है अफसर कहैं हुकुम सरकार।
पण्डित बोले गलत है आज्ञा हम तो अवज्ञा को तैयार ॥

इतना कहके पण्डित जी ने जनतहि तहां दीन बैठाय।
साढ़े छः के बाजत ही तहं औरौ नेता पहुँचे आय॥

आ जलूस में भये सम्मिलित श्री मौलाना अबुल कलाम।
श्री शेरवानी शामिल होयगै श्री जैराम दास दौलत राम॥

श्री डाक्टर हारडीकर आये औ श्री वल्लभ भाई पटेल।
आई श्री जवाहिर लाल की बन्द भये जो नैनी जेल॥

दीप नरायनसिंहजी आये तब दस बजन की समया आय।
कौनौ घटना भई न तबलों ज्वानो सुनियो कान लगाय॥

याके बाद पुलिस ने भइयो आपन लाठी लीन उठाय।
पीट चली है देखवय्यन का मार के उनका दिहेस भगाय॥

सारी रात रहे सब बैठे बीच राह में आसन मार।
गान करैं महिलायें बैठी सेवक करते जै जै कार॥

कोऊ हिलै न अपने दर से जल बरसै हा! मूसरा धार।
रैन बीत गइ बैठ बैठे भीगत भीगत भा भिनसार॥

पुलिस कमिश्नर मिस्टर हेली सात बजे तहं पहुँचे आय।
निकट जाय के वे नेतन के बोले ऐसन बचन सुनाय॥

जौ न हटिहौ तुम हियना से तब तो बन्दी लेब कराय।
बल प्रयोग से जलूस तुम्हरा यह जाघा से देब हटाय॥

श्री मालवीजी तब बोलत भै उत्तर दीना यह ललकार।
जो कुछ होई सब भोगन को हम साथिन संग हैं तय्यार॥

यह सुन अफसर सब नेतन का तुरतै कैद लीन करवाय।
मार भगावन को जनता के है फिर अज्ञा दिया सुनाय॥

अज्ञा सुनतै ज्वान पुलिस के तड़तड़ लाठी दिया चलाय।
बैठे भये जो सत्याग्रही मार के उनका दिहेन सोआय॥

सिक्ख वीर एक झन्डा लीने गोरा सरजन छीनन आय।
तबलौं वासे छीन न पायेस लठ से न जबलों दीन गिराय॥
तीन सौ सेवक तहवां गिर गै हटे नहीं वे वीर जवान।
भइ हड़ताल शहर के मांहो सारी बन्द भई दुकान॥
मिलैं बन्द ४१ होय गंइ देख पुलिस का यह लठ राज।
गीत राष्ट्री गावत घूमैं भारी जुटा मजूर समाज॥
बन्दी नेतन की पेशी भइ जबै अदालत के दरम्यान।
इन्कार किया है सब नेतन ने देन को अपना कुछो बयान॥
परन्तु बोले श्री मालवी बहस से छक्का दिया छोड़ाय।
बृटिश अदालत की करनी को सारी दुनियहि दिया देखाय॥
कहां ले बरनौ यह माया को भारी मचा अहै घमसान।
सत की भिड़न्त अहै असत से बेड़ापार करैं भगवान॥

## निवेदन कांड

बिन्ती सुन लो मेरी अ्यानो चारियु ओर है हा हा कार।
पच्चीस हजार से ऊपर कैदी राष्ट्र बाद के जो सरदार॥
उनकर गिनती सब जाहिर ना जो माता पे भये बलिदान।
तुम्हरेन खातिर हे मेरे भइयो जेल गये बहु दीना प्रान॥
धरना देन वे काहे जाते जौ तुम देत्यो मदिरा छोड़।
बन्दी उनकर कबहुँ न होते जात न लठियन से सर फोड़॥
अबहूँ चेतौ कुछ बिगड़ा ना सड़े वस्तु की बनै शराब।
छोड़ो गांजा चरस हे लोगो जो फेफड़ों को करै खराब॥
ताड़ी पीना छोड़ो जल्दी नहिं चितओ अब बाकी ओर।
चोंच से गैला खोद के कौवा सोइ ताड़ी में देवै बोर॥

नशा छोड़ दो सबही लोगो सबही मत में अहै हराम ।
जौ ना मनिहौ हुकुम बड़ोंका तबतो अवश्य बिगड़ी काम ॥

वस्त्र बिदेशी अब बरतौना याका छोड़ देव ब्योहार ।
जीत तुम्हारी यही करै है जानौ याहि अचुक हथियार ॥

मानौ कहना श्री गांधी का अब खद्दर का करौ प्रचार ।
परन्तु लीन्हयो हर जाघा न राख्यो ऐकर बहुत बिचार ॥

चर्खा संघ से लीन्यो खद्दर या तो पहिरेव बीन बनाय ।
सूत कटय्या बहु तुम्हरे में सूत बिदेशी देंय मिलाय ॥

भेज्यो बन्दी तुम बहुतन का औ बहुतन कर लीन्यो प्रान ।
बचेन खोचेन का हे मेरे भय्ये अबतो दै देव तुम जिवदान ॥

कदम पिछाड़ी अब डारौ ना इतना सुन लेव औरौ भाय ।
उड़ उड़ जूझौ रन खेतवा मा अब खटिया पर मरै बलाय ॥

जौ मरि जैहो रण के माहीं तुम्हरो नाम अमर होय जाय ।
जीत लड़ाई जौ तुम लेहहो भारत स्वतंत्र देइ देखराय ॥

पहिले तो जियरा मरतै नाहीं श्री कृष्ण ने कहा पुकार ।
वस्त्र के ऐसा नवा बदल के धरै पुराना चोला उतार ॥

जियत तुम्हारे पर बस भारत तौ भारत में तुम हौ भार ।
है दुखियारी भारत माता तुम्हरे जिन्दगी का धिक्कार ॥

अब तो लोहा सन्मुख लै लेव सत्य कहैं हम हाथ उठाय ।
मुंह ना फेरौ रण खेतवा से चहै तन धजी २ उड़ जाय ॥

कहना अब है महिलाओं से देवियु तुम्हरा अब है काम ।
हाथ बंटाओ तुम मर्दन का भारी छेड़ा अहै संग्राम ॥

छोड़ो रहना तुम भीतर का हराम जानो सुख औ भोग ।
रणचन्डी अब बनो हे बहिनो जपिहैं नाम तुम्हारा लोग ॥

चन्ड-मुन्ड को तुम्हीं ने मारा मेटा जन का दुख अपार ।
हतें खड्ग से मधु कैटभको जस यह गावत है संसार ॥

रक्त बीज औ महिषा सुर को दीना शत्रु के घाट उतार ।
महिरावन को तुम्हीं ने जीता जब रघुबर की होयगै हार ॥

राणा प्रताप की पत्नी का पढ़ा सुना है तुमने हाल ।
रानी झांसी की करनी से ऊंचा भारत का है भाल ॥

अमर नाम तुम अपना करलेव छोड़ो नहिं मर्दनको साथ ।
हाथ तुम्हारो पकड़ो उनने अब तुम पकड़ौ उनकर हाथ ॥

धीरज राखो अपने मन में पति रखवय्या हैं भगवान ।
पति कर संग न छोड़ियो कबहूँ संगै रहयो बांध कृपान ॥

फरक पड़ै जो इन बातनमें का तुम पढ़ियो सिया का हाल ।
पति के चरन की करते सेवा रही जो बन में चौदह साल ॥

हरिश्चन्द्र के महरानी की कथा है जानी सबै तुम्हार ।
चरणा डिगै ना कबहूँ धर्म से बहिनो सुनियो बात हमार ॥

विन्ती करौं मैं अब शारद से आओ जल्दी खड्ग उठाय ।
जब मर जइहैं लाल भारती तब का भोल बुतैहो आय ॥

जाहिर गाथा है दुनिया में आल्हा की तुम कीन सहाय ।
छाया राखौ अब बाबा पर तुम्हरो खप्पर रहे भराय ॥

पापी जान के जो नहिं आओ बिन्ती यह तब सुनो हमार ।
लक्ष्मी कमला मैं तुम भर देव माता आपन शक्ति अपार ॥

खप्पर तेगा इनका है देव अभेद बखतर देव पहिराय ।
अत्याचार का सर इन काटैं है तुम आसनसे देखव बताय ॥

मांगत बिदा हौं हे सुनवय्यो भगवत चरन में मैं सिर नाय ।
जिन्दगी रही तौ लैके गाथा फिर बीरनकै मिलिहौं आय ॥

---

राजा प्रेस, रानी मंडी, इलाहाबाद ।